For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

पिछले दो पाठों में हमने **स्पष्ट** रूप से पवित्र वचनों से समझा कि मनुष्य की आत्मा **नष्ट** की जा सकती है और **वह मरती** है और यह भी कि हम मनुष्यों के पास **आत्मा नहीं है** बल्कि ... **हम खुद आत्माएँ हैं**, और इस प्रकार जब हम मरते हैं, **हमारी आत्मा** (मतलब हम) भी मरती है। हम इस सच्चाई को बाईबल से यहेजकेल (Ezekiel) 18:4 वचन में पढ़ेंगे -

यहेजकेल (Ezekiel) 18:4 "इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा"

और फिर हम

भजन संहिता (Psalms) 22:29 "अपना प्राण नहीं बचा सकते"

वचन में पढ़ते हैं -

हमने कुछ विरोधात्मक लगने वाले वचनों और वचनों के अंशों को इस पाठ के **दूसरे भाग** में पढ़ा और अंत में हमें सिर्फ एक और अंश का अध्ययन करना था।

जी हाँ! **"धनी मनुष्य और निर्धन लाजर"** अंश, जिसको हम

लूका (Luke) 16:19-31

वचनों में पढ़ेंगे।

आज हम इस वचन के अंश का अध्ययन करेंगे जिसका उपयोग दुनिया भर के मसीही **दो प्रकार के उपदेशों को व्यक्त** करने में करते हैं।

☞ मृत्यु के बाद आत्मा का **शाश्वत और अमर** स्वभाव होने का उपदेश

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

नरक के अस्तित्व का उपदेश जिसको परमेश्वर ने **अनन्त यातना** के लिए बनाया है

आमतौर पर यह सोचा जाता है कि **धनी मनुष्य नरक गया** ... और कंगाल **लाजर स्वर्ग गया**।

पर जब हम इस अध्याय के 22 वें वचन की जाँच करते हैं, हम ये पढ़ते हैं की कंगाल मर जाता है और उसे स्वर्गदूतों ने उठाकर "अब्राहम की गोद" में पहुँचाया।

क्या "अब्राहम की गोद" स्वर्ग में हो सकती है जहाँ परमेश्वर रहते हैं?

इस अंश **को एक शाब्दिक घटना माना जाता** है जिसे प्रभु यीशु मसीह ने सुनाया! पर तर्क के प्रकाश में **20, 21 और 24 वचनों** का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि इसे **साधारण** भाषा समझना बहुत ही अनुचित होगा।
ऐसा कैसे? आइये हम

लूका (Luke) 16:20 "लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था"
वचन को पढ़ते हुए देखें -
यहाँ कंगाल लाजर धनी मनुष्य की डेवढ़ीलेटा हुआ था। ऐसा लग रहा था कि यह एक स्थायी प्रबंध था। यह धनी मनुष्य अपनी मेज से अतिरिक्त भोजन को कंगाल लाजर को भेजता था। जरा कल्पना करें! आजकल कौन सा धनी आदमी अपने घर के द्वार पर ऐसे प्रबंध की अनुमति देता है?!

क्या आप अपने घर के द्वार पर इसकी अनुमति देंगे?
और फिर भी इस धनी मनुष्य को बुरा माना गया है जो कि मरके नरक गया!

और फिर हम आगे पढ़ते हैं -

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

लूका (Luke) 16:21 "यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे"

हमारे चारों ओर हम कंगालों और कोढ़ियों को देखते हैं - कुछ लोग हाथ, पैर के बिना या कुछ घावों से भरे, पर कहीं भी कोई भी कंगाल या कोढ़ी कुत्तों को अपने घावों को चाटने की अनुमति नहीं देगा!

यह सबसे बड़ा अपमान होगा!

इस प्रकार लाजर के बारे में ऊपर वर्णित यह मामला **<u>सचमुच में संभव नहीं है</u>**!!

फिर इस विषय का मतलब क्या है? हम इसके बारे में बाद में देखेंगे।

लेकिन इससे पहले हम एक और वचन को देखेंगे -

लूका (Luke) 16:24 "तब उसने पुकार कर कहा, 'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, <u>ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं</u>"

इस दृश्य की जरा कल्पना कीजिए! जरा उस लपटों और गर्मी की कल्पना कीजिए!

क्या जीभ पर सिर्फ एक बून्द पानी आराम ला सकता था?

इस विषय को गर्मी के मौसम में एक गर्म दिन पर जाँचकर देखिये कि क्या बहुत जलने वाली गर्मी या धूप में जीभ पर केवल एक **बून्द** पानी आराम दे सकता है!

यह कल्पना करने के लिए भी बहुत बेतुका है!

फिर जरा उस धनी मनुष्य की अवस्था को सोचकर देखिये, **<u>जो असली आग की लपटों के बीच में</u>** था और यह सोचें कि क्या उसके जीभ पर कुछ बून्द पानी से उसे आराम मिल सकता था!!

यह साधारण भाषा नहीं हो सकती है।

फिर इस वचन के अंश का मतलब क्या है?

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे प्रभु यीशु हमेशा दृष्टान्तों में बात करते थे, जैसा कि हम पढ़ते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

मत्ती (Matthew) 13:34 "ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था"

जी हाँ! आइये अब हम इस अंश के **शुरुआत** की, प्रभु यीशु के अन्य, अनेक दृष्टान्तों के साथ तुलना करके देखें -

लूका (Luke) 15:11 ➪ "...किसी मनुष्य के दो पुत्र थे..."

लूका (Luke) 16:1 ➪ "...किसी धनवान का एक भण्डारी था..."

लूका (Luke) 19:12 ➪ "...एक धनी मनुष्य..."

लूका (Luke) 20:9 ➪ "...किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई..."

हम क्या देखते हैं?

जी हाँ! हम **दृष्टान्त की शुरुआत में एक ही प्रकार की भाषा का उपयोग** देखते हैं! इस प्रकार से हम यह समझते हैं कि **"धनी मनुष्य और निर्धन लाजर" का अंश भी प्रभु यीशु का एक दृष्टान्त ही होगा!**

वास्तव में यह एक दृष्टान्त ही है जिसे बहुत कम लोग दृष्टान्त के रूप में पहचानते हैं!

इसे हम **यीशु का "रहस्यमय" दृष्टान्त कह सकते हैं**!

आइये अब हम इस दृष्टान्त के दृष्टान्तिक अर्थ का अध्ययन करने की कोशिश करें -

"धनी मनुष्य" और "लाजर" दो वर्गों को दर्शाते हैं जिसकी चर्चा यीशु कर रहे थे!

आइये हम लूका (Luke) 16:19 वचन से पढ़ना शुरू करते हैं -

लूका (Luke) 16:19 "एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रति दिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था"

यह कुछ असामान्य नहीं है क्योंकि इसी तरह प्रभु यीशु ने अपने बहुत सारे दृष्टान्तों में दो वर्गों के बारे में दर्शाया है।

उदाहरण के लिए: लूका (Luke) 15:11 (दो पुत्रों का दृष्टान्त या प्रसिद्ध रूप में **उड़ाऊ पुत्र** का दृष्टान्त के नाम से जाना जाता है)

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसी तरह यहाँ भी **"धनी मनुष्य"** किसी एक वर्ग को दर्शाता है!
वे कौन हो सकते हैं?

प्रभु यीशु इस्राएल के देश का एक "शाब्दिक चित्र" बना रहे थे।

आइये अब हम यीशु के इन शब्दों से बने हुए "चित्र" का अध्ययन करें!

["बैंजनी कपड़े पहिनता" ➪]

यहाँ **"बैंजनी" राजसी** सत्ता को दर्शानेवाला रंग है जो कि राजाओं के द्वारा पहना जाता है।

यूहन्ना (John) 19:2, 3 वचन में इसकी पुष्टि होती है, जहाँ यीशु को एक बैंजनी वस्त्र पहनाया गया और उन्हें उपहास के रूप में **"यहूदियों के राजा"** कहकर बुलाया गया था। लेकिन यहाँ देश के रूप में इस्राएल के सम्बन्ध में यह चिन्ह **"राजसी वादों"** को दर्शाते हैं जिसे उन्हें **"पहनाया"** गया, जैसा कि हम

निर्गमन (Exodus) 19:5, 6 "इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्त्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही हैं"

वचनों में पढ़ते हैं -

जी हाँ! **"बैंजनी कपड़े पहनने"** का चिन्ह **परमेश्वर के राज्य के वादों को दर्शाते हैं**, जिससे इस्राएल को ढका या आवृत किया गया था। till here

इस प्रकार यह कहा गया था कि वे "बैंजनी कपड़े..." पहने हुए थे

["और मलमल पहिनता" ➪]

मलमल धार्मिकता को दर्शाता है, जैसा कि हम

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 19:8 "क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं"

वचन में पढ़ते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

उनकी धार्मिकता शाब्दिक **नहीं** थी, बल्कि वार्षिक तौर पर **प्रायश्चित के दिन का बलिदान उनके पापों** के लिए था।

लैव्यव्यवस्था (Leviticus) 16:29-31 "तुम लोगों के लिये यह सदा की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने जीव को दु:ख देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी प्रकार का काम काज न करे; क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा; और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे। यह तुम्हारे लिये परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस दिन अपने अपने जीव को दु:ख देना; यह सदा की विधि है"

वे **छाया** में परमेश्वर के सामने **आंशिक रूप से धर्मी ठहरे** थे और इस प्रकार वे उनसे प्रार्थना कर सकते थे और उन तक पहुँच सकते थे।

जी हाँ! इस्राएल

"मलमल पहिनता था"

जी हाँ! उनके पापों को परमेश्वर के सामने ढका गया था और वे परमेश्वर के सामने "वस्त्र" पहने हुए थे।

["सुख-विलास और धूम धाम के साथ रहता था"]

हम देखते हैं कि **परमेश्वर का वचन** भोजन है और इसे **"खाने-पीने"** के चिन्ह के रूप में **यिर्मयाह (Jeremiah) 15:16→** वचन में व्यक्त किया गया है।

यिर्मयाह (Jeremiah) 15:16 "जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया..."

इस्राएल के देश से अधिक कौन सा देश अनुग्रहित और धन्य था ... इतने सारे परमेश्वर के वचनों और आशीषों के साथ?

जी हाँ! इसे हम स्पष्ट रूप से

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy) 4:6-8, 33 "इसलिए तुम उनको धारण करना और मानना; क्योंकि और देशों के लोगों के सामने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है। देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उस को पुकारते हैं? फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूं? क्या कोई जाति कभी परमेश्वर की वाणी आग के बीच में से आती हुई सुनकर जीवित रही, जैसे कि तू ने सुनी है?"

वचनों में पढ़ते हैं।
जी हाँ! इस प्रकार से हम देखते हैं **"धनी मनुष्य"** परमेश्वर के वचनों को प्राप्त किये हुए **इस्राएल** देश का चिन्ह था।

वास्तव में **पूरे पुराने नियम** और सभी भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को उन्हीं पर प्रगट किया गया था!
पूरे यहूदियों के युग के दौरान **यशायाह** से लेकर **मलाकी** तक सभी भविष्यद्वक्ताओं को इस्राएल से बात करने भेजा गया था।

सचमुच में वे "प्रतिदिन धूम धाम (**परमेश्वर के वचनों को "खाया" करते थे**) के साथ रहते थे" (**यहूदियों के युग के दौरान**), और आइये अब हम **इस्राएल के आत्मिक धन** को
आमोस (Amos) 3:2 "पृथ्वी के सारे कुलों में से मैं ने केवल तुम्हीं पर मन लगाया है, इस कारण मैं तुम्हारे सारे अधर्म के कामों का दण्ड दूंगा"
वचन में देखें -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! वे परमेश्वर के द्वारा **चुने गये देश** थे।

जरा सोचें! **<u>पूरी पृथ्वी में एकमात्र चुना गया देश</u>**।

और हम इस प्रकार इस्राएल के बारे में

रोमियो (Romans) 3:1 "अतः यहूदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ?"

वचन में पढ़ते हैं -

➡ जी हाँ! एक यहूदी को क्या **आशीष** है?

या फिर

➡ यहूदियों का **"धन"** क्या है?

या फिर

➡ या फिर **यहूदियों के धन का तुलन पत्र (Balance Sheet)** क्या है?

हम इसका उत्तर

रोमियो (Romans) 9:4, 5 "वे इस्त्राएली हैं, और लेपालकपन का अधिकार और महिमा <u>और</u> वाचाएं <u>और</u> व्यवस्था <u>और</u> उपासना <u>और</u> प्रतिज्ञाएं उन्हीं की हैं। पुरखे भी उन्हीं के हैं,

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ। जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य है। आमीन।"

वचनों में पढ़ते हैं।

जी हाँ! सच में यह **धन** और **आशीषों** का एक चित्र है - इस्राएल के आत्मिक धन की एक पूरी सूची।

- सचमुच में प्रचुर मात्रा में धन!

सच में "धनी मनुष्य" के रूप में इस्राएल का उचित चित्रण किया गया है।

इस प्रकार हमने यीशु के द्वारा बताये गए इस्राएल के देश का एक "शाब्दिक चित्र" देखा है!!

अब उस **"कंगाल"** का क्या?

वह क्या है या किसका प्रतिनिधित्व करता है? आइये हम आगे पढ़ते हैं -

लूका (Luke) 16:20, 21 "लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था, और वह चाहता था कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे; यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यहाँ यह "कंगाल" जिसका नाम "लाज़र" था, वह <u>गैर यहूदियों</u> - अन्यजातियों को दर्शाता है!

कोई पूछ सकता है, कैसे?

आइये हम इसका उत्तर प्रयोग किये गए चिन्हों में देखें -

["एक कंगाल"]

अन्यजाति परमेश्वर के आशीषों में **बहुत गरीब** थे,
जिनके पास कोई आशीष **नहीं** थी! - **पूरी गरीबी!!**

["घावों से भरा"]

यह अन्यजातियों की पाप की स्थिति को दर्शाता है, जिसकी **शुद्धि** करने का कोई **रास्ता नहीं** था और न ही उनके पापों के लिए वे कोई प्रायश्चित ढूंढ पाए।

यह "घाव" उनकी **क्षमा न किये गए पाप की स्थिति** को दर्शाता है, जिनमें वे थे।

["डेवढ़ी पर"]

यह परमेश्वर के **"अनुग्रह से बाहर"** रहना दर्शाता है, क्योंकि **'घर'** इस्राएल के देश की **धन्य** और **आशीषित** अवस्था को दर्शाता है।

धनी मनुष्य के घर की **"दीवार"** व्यवस्था की वाचा को प्रस्तुत करती है, जैसा की हम

इफिसियों (Ephesians) 2:14 "क्योंकि वही हमारा मेल है जिसने दोनों को एक कर लिया और <u>अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी ढा दिया</u>।" ok

वचनों में देखते हैं।

और वह **"डेवढ़ी"**-- खतना की वाचा

उत्पत्ति (Genesis) 17:12-14 "पीढ़ी पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो, अर्थात परदेशियों से रुपा देकर मोल लिये जाए; ऐसे सब पुरूष भी जब आठ दिन के हो जाएँ, तब उनका खतना किया जाए। जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अथवा तेरे रुपे से मोल लिया जाए, उसका खतना अवश्य ही किया जाए; इस

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

प्रकार मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग-युग रहेगी। जो पुरूष खतनारहित रहे, अर्थात जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों मे से नष्ट किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा को तोड़ दिया॥"

को प्रस्तुत करती है, जिसके द्वारा **कोई** यहूदी **बनता** था।
अन्यजाति इस "दीवार" और "डेवढ़ी" से **बाहर** थे।

["जूठन"]

यह **"कुछ"** दिव्य आशीषों को दर्शाता है जिसे अन्यजातियों ने चाहा और भीख माँगी, जैसा की हम यीशु और कनानी स्त्री की घटना में देखते हैं।

मत्ती (Matthew) 15:25-28 "पर वह आई, और यीशु को प्रणाम करके कहने लगी, "हे प्रभु, मेरी सहायता कर"। उसने उत्तर दिया, "लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं"। उसने कहा, "सत्य है प्रभु, पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उनके स्वामियों की मेज से गिरते हैं"। इस पर यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है । जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो"। और उसकी बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई॥"
वचनों को पूरा पढ़ें।

["कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते"]

जैसा की हमने पहले ही देखा कि, **"घाव"** का चिन्ह **क्षमा न किये गए पाप** की स्थिति को दर्शाता है वैसे ही अब उन घावों को **"चाटना"** राहत या आराम को **दर्शाता** है । इस प्रकार यहाँ अपने **पापों से सान्तवना या प्रायश्चित** पाने के लिए अन्यजातियों के द्वारा किये गए **साधनों** की खोज को दर्शाता है।

अब ये कुत्ते क्या दर्शाते हैं?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

लैव्यवस्था (Leviticus) 11:27 “और चार पांव के बल चलने वालों में से जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं; जो कोई उनकी लोथ छूए वह सांझ तक अशुद्ध रहे।”

वचन में **<u>कुत्ता एक अशुद्ध प्राणी</u>** है।
इस प्रकार "कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते" पापों के प्रायश्चित के लिए अन्यजातियों के द्वारा **<u>अशुद्ध मार्ग की खोज</u>** को दर्शाता है -
जैसे की मूर्ति पूजा करना, अन्धविश्वास, बाल बलिदान, मन्दिर वैश्यावृत्त आदि।

जी हाँ! ऐसी ही स्थिति में अन्यजाति थे!!

फिर हम क्या पढ़ते हैं -
लूका (Luke) 16:22 “और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुंचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया।”

जी हाँ! “मर गया” **अन्त** का चिन्ह है।

क्या समाप्त हो गया था?

“दोनों मर गए” या यहूदियों पर **अनुग्रह की अवधि**, यहूदियों का युग - **समाप्त हो गया**।
वैसे ही अन्यजातियों पर **अकृपा की अवधि** भी सुसमाचार के युग के आरम्भ के साथ **<u>समाप्त</u>** हो गयी।

[“लाज़र”]
अन्यजातियों में उनको दर्शाते हैं जिन्होंने सुसमाचार को स्वीकार किया और मसीही बने।

[”स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया’-]

यह क्या है और इसका मतलब क्या है?

आइये हम ये देखें और समझें -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

["स्वर्गदूतों" ⇨]

यह प्रारम्भिक कलीसिया में सुसमाचार का संदेशा लाने वाले दूतों को दर्शाता है - विशेष कर **प्रेरित पतरस** जिन्होंने "अन्यजातियों के लिए दरवाजे" को कुर्नेलिउस के घर में खोला और **प्रेरित पौलुस** जो अन्यजातियों के लिए विशेष रूप से चुने गए प्रेरित थे

गलातियों (Galatians) 2:8 "क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझ से भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया"

और बरनबास, तीतुस, सीलास और लूका आदि, जो उसके साथ थे।

["अब्राहम की गोद" ⇨]

यह **"अब्राहम की सन्तान"**, बनने को दर्शाता है, जैसा की हम पढ़ते हैं -

गलातियों (Galatians) 3:7 "अतः यह जान लो कि जो विश्वास करनेवाले हैं, वे ही अब्राहम की सन्तान हैं।"

और इस प्रकार "अब्राहम के वादे के वारिस"→ मसीह।

गलातियों (Galatians) 3:16 "अतः प्रतिज्ञाएं अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, "वंशों को," जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि "तेरे वंश को" और वह मसीह है"

गलातियों (Galatians) 3:29 "और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो"

जी हाँ! अन्यजातियों के लिए एक सुनहरे मौके का चित्र ... मसीह के शरीर का सदस्य बनने के लिए।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

"धनी मनुष्य" के बारे में हम क्या पढ़ते हैं?

हम पढ़ते हैं कि - "वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया"।

यह दर्शाता है कि कैसे **इस्राएल** के अनुग्रह की अवधि या यहूदियों का युग **समाप्त** हुआ था और कैसे उनका देश **"गाड़ा"** (दफ़न) गया था कि वह पूरी तरह से **दृष्टि से बाहर** या अस्तित्व से बाहर चला गया और वह 70 ईस्वी के बाद पृथ्वी पर एक देश ही नहीं रहा।

और फिर हम पढ़ते हैं -

लूका (Luke) 16:23, 24 "और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से अब्राहम की गोद में लाजर को देखा। तब उसने पुकार कर कहा, 'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।'

वचन में

इसका मतलब क्या है?

यह 70 ईस्वी के बाद इस्राएल देश और **उसकी स्थिति** और सभी देशों में उनके फैलाव को दर्शाता है।

जकर्याह (Zechariah) 7:13, 14 "सेनाओं के यहोवा का यही वचन है: "जैसे मेरे पुकारने पर उन्होंने नहीं सुना, वैसे ही उसके पुकारने पर मैं भी न सुनूंगा; वरन मैं उन्हें उन सब जातियों के बीच जिन्हें वे नहीं जानते, आंधी के द्वारा तितर-बितर कर दूंगा, और उनका देश उनके पीछे ऐसा उजाड़ पड़ा रहेगा कि उस में किसी का आना जाना न होगा; इसी प्रकार से उन्होंने मनोहर देश को उजाड़ कर दिया॥"

जी हाँ! यह उनकी पीड़ाओं और यहाँ तक कि उनके **बुनियादी मानवधिकारों** से भी इनकार का एक चित्र है।

["पीड़ा में पड़े हुए"]

यहाँ आग **न्याय** का एक चिन्ह जो इस्राएल देश के ऊपर यीशु के इन शब्दों से शुरू हुआ

मत्ती (Matthew) 23:38 "देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है।"

उन्होंने यह उस वर्ष में बोला था जब उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया था - 33 ईस्वी।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

और तब से इस्राएल पर न्याय पूरा होने लगा जिसे **उन्होंने खुद अपने लिए माँगा था**, जैसा कि हम पढ़ते हैं--

मत्ती (Matthew) 27:25 "सब लोगों ने उत्तर दिया, "इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो।"

ये **न्याय और पीड़ाएँ** जिसके द्वारा इस्राएल **70 ईस्वी** से पूरे सुसमाचार युग के दौरान गया, उसे दर्शाता है क्योंकि **आग** परमेश्वर के न्याय का चिन्ह है।

यशायाह (Isaiah) 66:15, 16 "क्योंकि देखो, यहोवा आग के साथ आएगा, और उसके रथ बवण्डर के समान होंगे, जिससे वह अपने क्रोध को जलजलाहट के साथ और अपनी चितौनी को भस्म करने वाली आग की लपट से प्रगट करे। क्योंकि यहोवा सब प्राणियों का न्याय आग से और अपनी तलवार से करेगा; और यहोवा के मारे हुए बहुत होंगे॥"

इसके बारे में हम एक और वचन में भी पढ़ते हैं -

सपन्याह (Zephaniah) 3:8 "इस कारण यहोवा की यह वाणी है, जब तक मैं नष्ट करने को न उठूं, तब तक तुम मेरी बाट जोहते रहो। मैं ने यह ठान लिया है कि जाति-जाति के और राज्य-राज्य के लोगों को मैं इकट्ठा करूं, कि उन पर अपने क्रोध की आग पूरी रीति से भड़काऊं; क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी॥"

["दूर से अब्राहम"]

यह दर्शाता है कि कैसे इस्राएल को यह अहसास हुआ कि वे परमेश्वर के **अनुग्रह से बाहर** थे,

यहाँ अब्राहम परमेश्वर का एक **चित्र** है।

(छाया में अब्राहम ने इसहाक का जो बलिदान किया था, वह परमेश्वर का अपने एकलौते पुत्र को जगत के पापों के लिए बलिदान का चित्र है।)

["गोद में लाजर को देखा"]

यह सुसमाचार के युग में **मसीही अन्यजातीय देशों** की धन्य स्थिति को दर्शाता है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

["मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी ऊँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे"]
यह यहूदियों की प्रार्थनाओं को दर्शाता है, जिसे उन्होंने परमेश्वर से की थी, ताकि जिन मसीही देशों में वे रहते थे, वे उनपर **थोड़े अनुग्रह** दिखायें, जैसा कि अनन्य आवास कॉलोनी, विद्यालय और सभा के निर्माण के लिए जगह आदि।

फिर हम क्या पढ़ते हैं?

आइये हम पढ़ें

लूका (Luke) 16:25 "परन्तु अब्राहम ने कहा, 'हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है।"

वचन में

जी हाँ! यह परमेश्वर के खुद बात करने का चित्र है।

परमेश्वर कैसे बात करते हैं? वह तो उनके वचनों के द्वारा बात करते हैं!
यह परमेश्वर के **"उत्तर"** को दर्शाता है जिसे **"युगों की दिव्य योजना"** में उनके वचनों में प्रगट किया गया है।

-**यहूदियों का युग**, यहूदियों के लिए आशीषों **(अनुग्रह)** और अन्यजातियों के लिए पीड़ाओं **(अनुग्रह से वंचित)** का युग था।

और **सुसमाचार का युग** "विश्वासी" अन्यजातियों के लिए आशीषों और अंधे यहूदियों के लिए पीड़ाओं का युग था।

और फिर आगे पढ़ते हैं वचन में -

लूका (Luke) 16:26 "इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें; और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसका मतलब क्या है?

यह फिर से कुछ है जो कि परमेश्वर के वचनों में है!

यह यहूदी धर्म और इसाई धर्म के बीच **विभाजन** को दर्शाता है।

-यहूदियों! और इसाई!

["एक भारी गड्ढा ठहराया गया"]

यह एक **बाधा या रुकावट** को दर्शाता है।

यह किसका प्रतिनिधित्व करता है?

यह यीशु को स्वीकार करने और विश्वास करने की ओर यहूदियों का **अविश्वास** था। और वे इस प्रकार आशीष के पक्ष तक पार **नहीं** कर सके जो यीशु को स्वीकार करने से पाया जा सकता था।

आइये अब हम अब्राहम के आगे के शब्द का महत्त्व देखें -

["जो यहाँ से (अब्राहम के पक्ष से) उस पार"]

यह **इसाई उपदेश** की असमर्थता को दर्शाता है जो इस्राएल देश की व्यवस्था के बंधन से छुट पाने में **असमर्थ** था।

उदाहरण:

गलातियों (Galatians) 3:1 "हे निर्बुद्धि गलतियों, किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानों आंखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया!"

["वहाँ से (धनी मनुष्य के पक्ष) इस पार"]

यह इस तथ्य को दर्शाता है कि यहूदी **दूसरे संसार** के थे और वे मूसा और व्यवस्था का **पालन** करते थे .... और उन्होंने यीशु का इंकार कर दिया और उन्हें **बिल्कुल** भी पहचाना नहीं, जैसा कि हम

यूहन्ना (John) 9:28, 29 "... हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते की कहां का है।"

वचनों में पढ़ते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! **सचमुच बहुत बड़ा गड्ढा** था!!!

आइये अब हम आगे पढ़ें -

लूका (Luke) 16:27-31 "उसने कहा, 'तो हे पिता, मैं तुझ से बिनती करता हूं कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं; वह उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं'। अब्राहम ने उस से कहा, 'उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें'। उसने कहा, 'नहीं, हे पिता अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे मन फिराएंगे'। उसने उस से कहा, 'जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे॥"

जी हाँ! यह सुसमाचार युग में **इस्राएल देश** की **बेबसी** और **असहाय** स्थिति का एक चित्र है।

["पांच भाई"]

यह **"दस गोत्रों"** वाले **इस्राएल** देश को दर्शाता है, जबकि धनवान **"दो गोत्रों"** वाले **यहूदा** देश को दर्शाता है।

हम इस विषय के बारे में पढ़ते हैं -

2 इतिहास (2 Chronicles) 11:1-4 "जब रहूबियाम यरूशलेम को आया, तब उसने यहूदा और बिन्यामीन के घराने को जो मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे इकट्ठा किया, कि इस्राएल के साथ युद्ध करें जिससे राज्य रहूबियाम के वश में फिर आ जाए। तब यहोवा का यह वचन परमेश्वर के भक्त शमायाह के पास पहुंचा: "यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से और यहूदा और बिन्यामीन के सब इस्राएलियों से कह, 'यहोवा यों कहता है, कि अपने भाइयों पर चढ़ाई कर के युद्ध न करो। तुम अपने अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है"। यहोवा के ये वचन मानकर, वे यारोबाम पर बिना चढ़ाई किए लौट गए।"

वचनों में

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! सुलैमान राजा की मृत्यु के बाद इस्राएल देश के बारह गोत्रों का दो भाग में विभाजन किया गया था।

यहूदा और बिन्यामीन के दो गोत्रों से **यहूदा देश बना**
और बचे हुए दस गोत्रों से **इस्राएल देश बन** गया।

अब अगर "धनवान" दो गोत्रों वाले यहूदा देश को दर्शाता है, तब अवश्य "पांच भाई" दस गोत्रों वाले इस्राएल देश को दर्शाते होंगे!!

["मूसा और भविष्यद्वक्ताओं" ⇨]

यह प्रस्तुत करता है **पुराने नियम** को और मसीहा की साक्षी को और कैसे उसे महिमा और राज्य प्राप्त करने से पहले पीड़ित होना होगा और मरना होगा, जैसा की **यशायाह (Isaiah) 53 अध्याय**, **भजन संहिता (Psalms) 22 अध्याय** आदि में अभिलिखित किया गया है।

जी हाँ! यहूदी **मसीहा के इस पहलू** को पहचान नहीं सके और इस प्रकार वे **यीशु को पहचान नहीं सके**!

["मरे हुओं में से कोई जी भी उठे" ⇨]

यहाँ सन्दर्भ यीशु का **नहीं** है। याद रखें कि यह दृष्टान्त और चिन्ह वाली भाषा है .... सरल या शाब्दिक भाषा **नहीं**।

तो यहाँ किसे संदर्भित किया गया है जो मर गया था और फिर मरे हुओं में से जी उठा?

हम इसका उत्तर देखते हैं--

इफिसियों (Ephesians) 2:1 "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।"

जी हाँ! यह **"इसाई"** और **"अन्यजाति ईसाईयों"** का एक सन्दर्भ है जो **"मरे हुए"** स्थिति से **"उठे"** हैं, जबकि अब भी जगत उसी मरी हुई स्थिति में है।

लूका (Luke) 9:60 "उसने उससे कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस प्रकार सुसमाचार के उपदेश का कोई भी ईसाई प्रयास इस्राएल देश को बचा नहीं सकता।

तो इस्राएल का क्या होगा???

आइये हम इसका उत्तर पढ़ें -

रोमियो (Romans) 11:25, 26 “हे भाइयों, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो कि जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्त्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। और इस रीति से सारा इस्त्राएल उद्धार पाएगा। जैसा लिखा है, छुड़ानेवाला सियोन से आएगा, और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा।”

जी हाँ! हम पढ़ते हैं कि **सारा इस्राएल <u>“बचाया जाने वाला”</u>** है!
उनका उद्धार कलीसिया के उद्धार **<u>के बाद होगा</u>**, जो परमेश्वर की अपनी योजना में

दो उद्धार को दिखाता है।

इस्राएल का **अविश्वास** और **अंधापन** कलीसिया के समापन के **<u>बाद</u>** ही **मिटेगा**!!

इस प्रकार यह दृष्टान्त दो वर्गों को और दो युगों में उनकी स्थिति को सूचित करता है।

जब यीशु ने यह बात की तब वे इन दो युगों के **<u>बीच के संगम</u>** में खड़े थे - जब यहूदियों के युग का **<u>अंत</u>** और सुसमाचार युग का **<u>आरम्भ</u>**।

-जी हाँ! दो युगों की एक कहानी!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

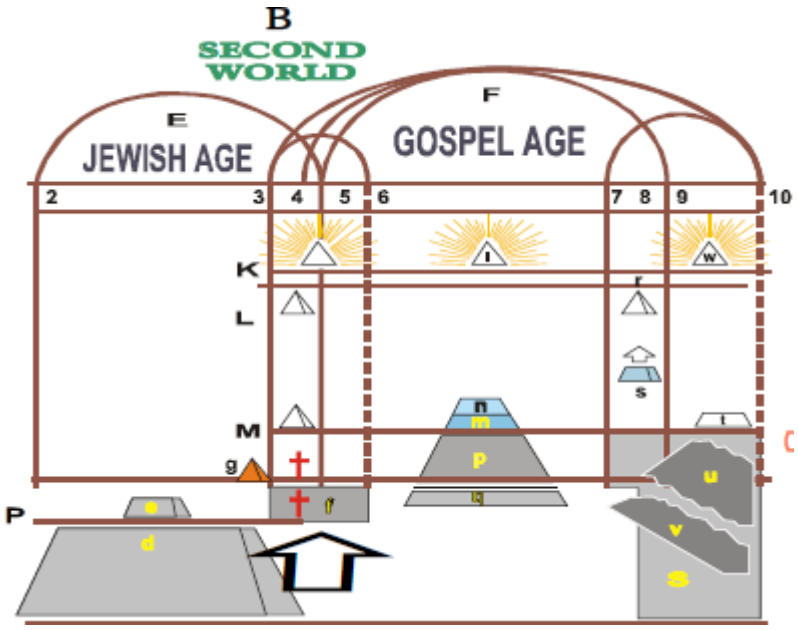

वैसे भाइयों, क्या आपने ध्यान दिया कि यहाँ मनुष्य की आत्मा का **कोई सन्दर्भ नहीं है**!!!

अगले पाठ में हम **"नर्क की सच्चाई"** का अध्ययन करेंगे।

--आमीन--

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com